IA-2 Date- 08/04/2021.
Unit-6

Dr Raj Gopal
Department of Philosophy.

देकार्त

(1) देकार्त को आधुनिक दर्शन का पिता क्यों कहा जाता है।

⇒ देकार्त से पहले दर्शन अन्धविश्वास एवं रूढ़िगत परम्पराओं से ग्रसित था। उस समय ज्ञान का उद्गम तर्क या बुद्धि न होकर धार्मिक विश्वास था। देकार्त ने सर्वप्रथम दार्शनिक विवादों को दूर करने के लिए तर्क एवं बुद्धि का प्रयोग किया। देकार्त ने गणित विशेष रूप से ज्यामिति की निश्चयात्मक पद्धति का सहारा लिया। इसे निगमन विधि कहा जाता है। देकार्त के परवर्ती बुद्धिवादी विचारकों ने इसी पद्धति के आधार पर अपने-अपने दार्शनिक सिद्धान्तों को विकसित किया। इसी कारण देकार्त को आधुनिक दर्शन का पिता कहा जाता है।

(2) देकार्त की सन्देह विधि की व्याख्या करें।

देकार्त से पूर्व का दर्शन अन्धविश्वास एवं रूढ़िगत परम्पराओं से ग्रसित था। दर्शन पर धर्म का आधिपत्य था। दर्शन स्वतंत्र चिंतन का विषय वस्तु नहीं था। उस समय की मूल समस्या दर्शन के क्षेत्र में निर्विवाद एवं निस्सन्देह सत्य की प्राप्ति करना था। इसी कारण देकार्त ने अपने दर्शन का प्रारंभ संदेह से किया। वे अपने से पूर्व सभी दार्शनिक विचारों को स्पष्टता एवं विवेकपूर्णता की कसौटियों पर कसने का प्रयास किया जो ज्ञान स्पष्ट एवं विवेकपूर्ण है उसी को प्रामाणिक ज्ञान माना।

देकार्त शरीर संसार, अन्तरिक्ष और बाह्य सभी वस्तुओं पर संदेह करते हैं। वे सन्देह के माध्यम से निस्सन्देह सत्य की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। संशय ही ज्ञान का स्रोत यही देकार्त की सन्देह विधि है। इस प्रकार देकार्त का सन्देह पद्धति वैध ज्ञान-प्राप्ति का साधन है। देकार्त के अनुसार सत्य साध्य है संदेह साधन है। देकार्त सर्वप्रथम व्यवस्थित रूप से वास्तविक ज्ञान प्राप्ति हेतु एक प्रारूप तैयार किया इसी कारण देकार्त को आधुनिक संदेह पद्धति का जनक माना जाता है।

Scanned with CamScanner

(3) देकार्त "मैं सोचता हूँ इसलिए मैं हूँ" की व्याख्या करें।

देकार्त ने अपने दर्शन की शुरुआत सन्देह पद्धति के आधार पर किया। इसी क्रम में वे सबसे पहले स्वयं अपनी सत्ता पर भी संदेह किये। देकार्त का मानना है कि - मैं सभी कुछ पर सन्देह कर सकता हूँ, परन्तु सन्देह कर्ता पर मुझे सन्देह नहीं है। संदेह की क्रिया होती है तो इससे इसका कर्ता प्रमाणित है। ज्ञान का विषय भ्रम हो सकता है, परन्तु ज्ञाता भ्रम नहीं हो सकता है। इसलिए यह प्रमाणित है कि मैं सोचता हूँ, इसीलिए मेरी सत्ता है।

देकार्त यह प्रमाणित करते हैं कि संदेह करना संदेह कर्ता (आत्मा) की ओर संकेत करता है। तार्किक रूप से चिंतन करने पर चिंतक का अस्तित्व स्वयं सिद्ध हो जाता है। आत्मा का प्रमाण इन्द्रियानुभव एवं बौद्धिक ज्ञान पर आधारित नहीं है। यह अन्तःप्रज्ञा से उत्पन्न स्वयं सिद्ध ज्ञान है। आत्मा ही सभी ज्ञान की पूर्व मान्यता है। इसी के आधार पर अन्य द्रव्यों ईश्वर और जड़ पदार्थों की सत्ता को तार्किक दृष्टिकोण से प्रमाणित किया गया। इस प्रकार से देकार्त की ज्ञानमीमांसा एवं तत्वमीमांसा का प्रथम मूल बिन्दु आत्मा है।

2015 (4) देकार्त मन-शरीर संबंध की व्याख्या करें।

⟹ देकार्त मन और शरीर को सापेक्ष द्रव्य मानते हैं।

मन और शरीर (अचित) के क्रमशः विचार और विस्तार दो अलग-अलग गुण हैं। मन में विस्तार नहीं हो सकता तथा शरीर में विचार नहीं हो सकता है। इस प्रकार से मन और शरीर दोनों विरोधी तत्व हैं।

परन्तु दिन प्रतिदिन के अनुभव से यह स्पष्ट होता है कि मन तथा शरीर में प्रतिदिन अन्तःक्रिया होती है। शरीर को भूख प्यास लगता है मन उदास एवं बेचैन हो जाता है। साथ ही मन में जब दुख का भाव उत्पन्न होता है तो शरीर कमजोर तथा अप्रसन्न हो जाता है।

देकार्त मन तथा शरीर दो विरोधी तत्वों के बीच संबंध स्थापित करने के लिए विद्युत संयोगवाद सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है। इसे क्रिया-प्रतिक्रियावाद (Interactionism) सिद्धान्त भी कहा जाता है। इस सिद्धान्त के अनुसार आत्मा और शरीर में

Scanned with CamScanner